International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(IV), April - June, 2021, pp.138-142

शिक्षा एवं निर्विद्यालयीकरण

जागृति शर्मा*

सार

नवीन भौक्षिक–चिन्तन में वर्तमान विद्यालयों की अनुपयोगिता सिद्ध कर निर्विद्यालयीकरण का स्वर अधिक प्रखर हो रहा है। इस चिंतन धारा में भविष्य में विद्यालयविहिन समाज की कल्पना की जा रही है। जिसमें शिक्षा अनौपचारिक संस्थाओं के माध्यम से प्राप्त की जायेगी क्योंकि वर्तमान विद्यालय आम आदमी की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते है। वे एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के विशेषाधिकारों को बनाये रखने के साधन है। असमानता इस संसार का सत्य है। भौतिक संसार की दृष्टि से असमानता का कारण भौतिक सम्पन्नता असम्पन्नता है। सारा संसार इस दृष्टि से मोटे रूप में दो वर्गो में बांटा जा सकता है। एक वर्ग के अन्तर्गत आते है – सम्पन्न देश तथा दूसरे के अन्तर्गत निर्धन देश। सम्पन्न देशों को विकसित देश भी कहा जाता है। ये विकसित देश सभी दृष्टियों से निर्धन एवं अविकसित देशों से भिन्न है। शिक्षण के क्षेत्र में भी इन देशों से भिन्न है। शिक्षण के क्षेत्र में भी इन दोनों में बहुत असमानता है। अविकसित देशो में जहां विद्यालयीकरण अत्यावश्यक है। वहां विकसित देशों में निर्विद्यालयीकरण का आन्दोलन चला है। शिक्षा के परम्परागत संस्थान स्कूल है युगों युगों से यह शिक्षा देते आ रहे है। और व्यवहारिक रूप से इनका ज्ञान के स्त्रोतों पर एकाधिकार है। हालांकि परिवर्तित परिस्थितियों में इनकी आलोचना यहा कह कर की जा रही है कि इनकी उपयोगिता अब समाप्त हो चुकी है। ये अब अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर रहे है। स्कूलों की शिक्षा को अनिवार्य यांत्रिक, खचीर्ली, गरिमाहीन, और निष्क्रिय बना दिया गया है। यही कारण है कि इवान– अलिच, जॉन हाल्ट, पॉल गुडमैन, चार्ल्स सिल्वर मैन और बहुत से अन्य लोगों ने स्कूल विहीन समाज के लिये क्रान्ति भुरू कर दी थी। स्कूल विहीन अवधारणा के प्रतिपाद इवान इलिच का जन्म वियना में 1928 ई. में हुआ। उसने लैटिन अमेरिका को ध्यान में रखते हुए ''प्राविधिक समाज में संस्थागत विकल्प का अनुसंधान करने की एक संगोष्ठी का संचालन किया। विद्यालय विहीन समाज की धारणा इस अनुमान पर केन्द्रित है कि सार्वजनिक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा द्वारा सम्भव नहीं है।

कुंजीशब्दः *निर्विद्यालयीकरण, विद्यालयविहीन, चिन्तनधारा, अवधारणा, अनुसंधान, क्रियाशीलता, संस्थागत, भूमण्डलीकरण, सर्वजन, प्रज्ञा, व्यष्टि, अधः पतन।*

प्रस्तावना

स्कूल विहीन समाज की अवधारणा को बल देने वाली मान्यता यह है कि स्कूलों के माध्यम से दी जाने वाली सर्वजन शिक्षा साध्य नहीं हैं। शिक्षा के भूमंडलीकरण लक्ष्यों को पाने के लिये वैकल्पिक संस्थान बनाए जाने चाहिये। इससे ही विश्व के सभी लोगों की निरक्षरता दूर हो पायेगी। विश्व के देशों की प्रगति में बाधा उत्पन्न करने वाली दो मुख्य बुराईयां जनसंख्या और निर्धनता है। यह मान्यता है कि स्कूलों ने समाज का कोई विशेष हित नहीं किया है। शिक्षण कार्य सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है।

[6] प्रवक्ता, आत्माराम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बस्सी, जयपुर, राजस्थान।

इलिच का कहना है कि स्कूलों में कोई भी महत्वपूर्ण चीज नहीं सीखी जाती जबकि जीवन के स्कूल में प्रत्येक चीज सीखी जा सकती है।

अनेकों विद्यार्थी, विशेषकर वह जो निर्धन है अतः प्रज्ञात्मक ढंग से जानते है कि विद्यालय उनके लिये क्या करते है। वह उन्हें भ्रम में डालते है प्रक्रिया तथा वस्तु कें संबंध में। विद्यार्थी जो विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है वह उसे शिक्षण को ही सीखना समझने में भ्रम में डालते है। विद्यार्थी कक्षा पास करना शिक्षा समझने लगता है डिप्लोमा प्राप्त करने को कुशलता और धारा प्रवाहित वाणी को कुछ नवीन कथन मानने लगता है। उसकी कल्पना इस प्रकार से विकसित की जाती है कि सेवा को मूल्य के स्थान पर स्वीकार कर लेता है।

ईलिच का कहना है कि मूल्यों का संस्थापन अनिवार्य रूप से भौतिक प्रदूषण, सामाजिक ध्रुवण तथा मनोवैज्ञानिक नपुंसकता की ओर ले जाता है। यह तीनों आयाम है संसार के अधः पतन तथा दुर्दशा के, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के।

ईलिच व्याख्या करता है कि इस अधः पतन की प्रक्रिया में और गति उस समय आ जाती है जबकि अभौतिक आवश्यकतओं वस्तुओं की मांग में बदल जाती है, जब स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यष्टि, गतिशीलता, कल्याण या मनावैज्ञानिक स्वास्थ्य लाभ की परिभाषा सेवाओं या उपचार में परिणाम के रूप में दी जाती है।

निर्विद्यालयीकरण का अर्थ

विद्यालय विहीन समाज का अर्थ एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था से है जिसमें मूल्यों के संस्थापन पर बल नहीं है वरन जानबूझ कर एक क्रियाशीलता के जीवन को उपभोक्ता के जीवन की तुलना में चुना गया है। एक ऐसी जीवन शैली का चुनाव किया जाता है जो हमें स्वैच्छिक तथा स्वतंत्र बनाने में योगदान देती है। इसके लिये हमें एक मानक की श्रृंखला की आवश्यकता होगी जो हमें यह अनुभूति प्रदान करेगी कि हम उन संस्थाओं को पहचान ले जो कि व्यक्तिगत वृद्धि को लत की तुलना में सहायता देती है और साथ साथ यह इच्छा भी कि हम अपने तकनीकी साधनों को इस प्रकार की संस्थाओं में उन्नति लाने में व्यक्त करें।

ईलिच का कहना है कि विद्यालय जैसे कि वह है उनसे समाज को कोई लाभ नही मिल रहा है वरन वह एक ओर तो राष्ट्र की पूंजी व्यर्थ के शिक्षण में गंवा रहे है तो दूसरी ओर दरिद्रो की दशा में कोई भी परिवर्तन लाने में असमर्थ है।

परिभाषाएं

इवान इलिच – विद्यालय का विकल्प इस प्रकार सुझाते है – ''विद्यालय का सर्वाधिक मूलभूत विकल्प सेवा का एक ऐसा जाल होगा जो प्रत्येक मनुष्य को एक समान उद्देश्य से प्रेरित हो। अन्य मनुष्यों के साथ उसके उपभोग करने का समान अवसर देगा।

रेवरैट रेमर – '' शिक्षा का बुनियादी लक्ष्य उस विश्व का अवबोध होना चाहिये जिसमें हम जीते है तथा जिसमें हम जीते है तथा जिसकी हम आकांक्षा करते है, यह अवबोध हमें प्रभावी कर्म हेतु प्रेरित कर सकता है।

इलिच की भांति वे भी यह मानते है कि लोग वही सीखते है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है और यह उन्हें सीखने की अनुमति दी जाती है।

पौल गुडमैन के अनुसार – '' कुछ कक्षाओं वाले विद्यालय भवन त्याग कर शिक्षकों का प्रावधान कीजिए तथा नगर का ही विद्यालय की भांति प्रयोग कीजिए इसकी सड़कों, भोजनालओं, भण्डारो चल चित्रों अजायबघरो पार्को व फैक्ट्रियों का।

"Education in the year 2000" ग्रंथ में हूसन टोर्सटन ने भाषी विद्यालयों के स्वरूप को प्रकट करते हुए कहा है कि ''भविष्य के बुनियादी विद्यालय को कुछ मूलभूत कौशलों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। इन मूलभूत कौशलों व ज्ञान से बालक को अंग्राकित बातों के लिये प्रशिक्षित करना चाहिये।

- सामान्य नागरिता।
- कुछ व्यवसायों के लिये आवश्यक प्रारम्भिक प्रशिक्षण युवकों को देना।
- युवकों को निरन्तर परिवर्तनशील व्यवसायों के लिये तैयार करना।

उपरोक्त मत से यह स्पष्ट होता है विश्व के सभी देशों में विशेषतः भारत जैसे विकासशील देशों में विद्यालयों की उपयोगिता बनी रहेगी यद्यपि उनके वर्तमान संगठन में पर्याप्त परिवर्तन करने होगें।

निर्विद्यालयीकरण की विशेषताएं

इलिच द्वारा प्रस्तुत निविद्यालयीकरण की विचारधारा अपने आप में एक नवीन विचारधारा है और विकसित देशो, विशेषतः अमेरिका के संदर्भ में। इलियच द्वारा प्रस्तुत इस विचारधारा की निम्न विशेषताएँ एवं सारांश हो सकता है।

- निर्विद्यालयीकरण की विचारधारा ने चिन्तन की एक नई दिशा को जन्म दिया है।
- यह विचारधारा क्रांतिकारी विचारधारा है।
- यह विचारधारा के संदर्भ में इलियच ने विकसित देशों की विसंगतियों को विश्लेषण किया है।
- संस्थागत शिक्षा को पूंजीवाद एवं औद्योगिक समाज की देन माना गया है।
- संस्थागत शिक्षा को मानवीय शोषण का माध्यम माना गया है।
- विद्यालय पूंजीपतियों की स्वार्थपूर्ति तथा सामान्य जनसमुदाय के शोषण का साधन है।
- विद्यालयी शिक्षा के परिणाम स्वरूप व्यक्ति उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं का उपयोग करता है।
- विद्यालय व्यक्ति को मानसिक रूप से इस तरह तैयार है कि अनिवार्य रूप से उसे उन वस्तुओं तथा सेवाओं का उपयोग करना पड़ता है।
- इलियच शिक्षा संस्थानीकरण के विरूद्ध इसलिये है कि इसके परिणामस्वरूप उस उपभोक्ता समाज का जन्म हुआ जो तिल तिल कर मनुष्य को खाता जा रहा है।
- मानव जीवन की उन्नति के लिये शिक्षा का संस्थानीकरण खत्म किया जाना चाहिये।
- संस्थागत शिक्षा वह निरर्थक शिक्षा है जो समाज में असमानता एवं स्तरीकरण उत्पन्न करने का साधन है।
- संस्थागत शिक्षा व्यक्ति के मुक्त विकास में बाधक है वह व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने के बजाय, पराश्रित बनाती है।
- विद्यालय अधिगम का उचित माध्यम नहीं है।
- विद्यालय की अधिगम संस्था के रूप में उपयोगिता सही नहीं है।
- अवस्था विशेष, पूर्णकालिक स्थिति, क्रमबद्ध पाठ्यक्रम आदि के कारण विद्यालय की वैधता संदिग्ध है।
- विद्यालय व्यक्ति को नाप तौल की दुनिया में प्रवेश करवाता है।
- विद्यालय डिब्बा बन्द सूचनायें प्रस्तुत करते है।
- विद्यालय शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन से दूर ले जाता है।
- इलियच ने ज्ञान प्राप्ति की चार श्रृंखलाओ का उल्लेख किया है।
- आज की जटिल सामाजिक व्यवस्था में निर्विद्यालय में संकल्पना वैचारिक एवं काल्पनिक हो सकती है।
- निर्विद्यालयीकरण का विचार अविकसित देशों के उपयुक्त नहीं
- आधुनिक उपभोक्ता समाज संस्थागत दिशा के छदम पाठ्यक्रम के साथ अनुप्रणित होता रहेगा।

निर्विद्यालयीकरण आन्दोलन

यह आन्दोलन ईसा के बीसवीं शताब्दी के सातवे दशक में इवान इलियच की पुस्तक डिस्कूलिंग सोसाइटी के माध्यम से सामने आया। इसी दशक में इस पुस्तक के बाद एवर्ट रेमर की ''स्कूल इच डेड'' पुस्तक प्रकाश में आयी। कार्ल फोनेस्का ने भी 'द केस फॉर डिस्कूलिंग' पर एक लेख लिखा। इवान इलियच वर्तमान विद्यालय को ''विश्वव्यापी पागल खाना या बन्दी गृह मानकर शिक्षा के आधारभूत विकल्पों की चर्चा करते है।'' इवान इलियच इस प्रकार के बंदीगृह के समान विद्यालय के स्थान पर मुफ्त विद्यालय का समर्थन करते है।

स्कूल विहीन अवधारणा के विशेष अंग

- **संस्थानीकरण के विरूद्ध** – ईलिच सभी प्रकार के संस्थानों का विरोधी था क्यों कि संस्थान भौतिक प्रदूषण उत्पन्न करता है जिससे समाज का अपकर्ष या पतन हो जाता है इलिच के अनुसार '' समूचे विश्व में स्कूल का समाज पर शिक्षा विरोधी प्रभाव पड़ा है।
- **स्कूली शिक्षा का विरोध** – सीखने की श्रेणी शिक्षण होने शिक्षा उपलब्धि होने डिप्लोमा, सक्षमता तथा धारा प्रवाह बोलना कुछ नया कहने की योग्यता होने के भ्रम से भ्रमित होने के लिये छात्र को स्कूली शिक्षा दी जाती है। इलिच का कहना है कि स्कूली शिक्षा प्रक्रिया और सार को भ्रमपूर्ण बनाती है।
- **स्कूलों का विरोध** – वह स्कूल को आयु, अध्यापक, उपस्थिति, पाठयक्रम तथा स्थान सभी विनिर्दिष्ट होने और आयु के अनुसार लोगों का समूह बनाने वाला कहता है। यह समूहन तीन निर्विवाद आधारों पर किया जाता है।
  - स्कूली बच्चे।
  - स्कूली शिक्षा प्राप्त बच्चे।
  - स्कूल में पढ़ाये जा सकने वाले बच्चे।
- **अध्यापकों का विरोध**

शिक्षण का परिणाम शिक्षा को मानकर स्थापित संस्था स्कूल है। इलिच कहता है कि जीवन जीने की विधि प्रत्येक व्यक्ति स्कूल से बाहर सीखता है। हम बोलना प्रेम करना, महसूस करना, खेलना, परस्पर व्यवहार करना, और कार्य करना अध्यापक के हस्तक्षेप के बिना सीखते है। बच्चे हम उम्रों, चुटकलों, अवसरों, प्रेक्षण और प्रतिभागिता से ही अधिकार सीखते है।

- **पूर्णकालिक उपस्थिति का विरोध** – स्कूल बच्चे की पूर्णकालिक उपस्थिति को अनिवार्य बनाते है। अध्यापक उनका एक अभिरक्षक, नैतिकवादी, और चिकित्सक है। वह बच्चे में सही और गलत के बारे में प्रचलित सिद्धांतों को ढूढ़ता रहता है।
- **प्रमाण पत्र और मानवीकरण का विरोध** – इलिच प्रमाण पत्र और मानवीरकण का विरोधी है मूल्यवान शिक्षा उपस्थिति का परिणाम है जिससे वह सहमत नहीं है। मूल्यों का मापन श्रेणियां और प्रमाण पत्र में होता है परंतु वह इनसे भी सहमत नहीं है।

निष्कर्ष

स्कूल विहीन समाज की अवधारणा के प्रतिपादक इवान इलिच ने इस बात पर बल दिया कि स्कूलों के माध्यम से दी जाने वाली सर्वजन शिक्षा साध्य नहीं है यह सत्य है कि स्कूलों का एकाधिकारी समाप्त किया जाए तथा स्कूल शिक्षा ही एक मात्र शिक्षा नहीं है । इसके अलावा परम्परागत पाठ्यक्रम विधियों, श्रेणियों, प्रमाण पत्रों के साथ दृढ़ता से चिपके हुए स्कूल शिक्षा के प्रयोजनों को समुचित रूप से पूरा करने में असमर्थ है। हमारे समाज की अधिक जानकारी वाली शिक्षा संस्थानीकृत (सरकारी) स्कूल नहीं दे सकते है तथा इस दिशा में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करने में असमर्थ है। स्कूल विहीन समाज के समर्थक सभी लोगों ने अनिवार्य शिक्षा की आलोचना की है लेकिन उन्हें इस बात से सहमत होना होगा कि न्यूनतम शिक्षा अति आवश्यक है और

जैसा कि स्कूल विहीन समाज भी विकासशील देशों में आरंभिक शिक्षा को जन जन तक पहुंचाने की आवश्यकता को मानता है। तथा बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के बहुत से साधनों और माध्यमों को समर्थक है। यह शिक्षा अति आवश्यक है इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि किसी तरह का दबाब आरूचि उत्पन्न करता है और किसी चीज का एकाधिकार हानिकारक है। आधुनिक समाज में आए दिन हिंसा, उन्माद और असंतोष बढता जा रहा है तथा इस समस्या का समाधान करने के लिये सभी साधनों से छात्रों की पहल, जिज्ञासा, प्रतिभागिता और सृजनशीलता को बढाया जाना है। आज के छात्र कल के नागरिक है सामाजिक गतिशीलता समूह शिक्षा ओर सामाजिक जीवन का प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना उसकी भावी भूमिका और कार्य कदापि उचित नहीं हो सकेगें।

संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में आमूल सुधार किये जाए तथा व्यक्ति की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को अनुकूल पद्धति की मान्यता दी जाए।

पिवते ने यह टिप्पणी उचित ही की है कि ''इलिच स्कूल का नहीं स्कूली पद्धति का शत्रु है वह स्वतंत्र संगठन ओर अभिप्रेरणा पर आधारित स्कूल को नही बल्कि अति बाध्यताओं और दबाब पर आधारित स्कूली पद्धति को नष्ट करना चाहता है। इस प्रकार स्कूल विहीन समाजको नही बल्कि शिक्षा को सार्थक जीवंत, स्वतंत्र और रोचक बनाकर '' नवस्कूल युक्त समाज'' के निर्माण का प्रयास किया जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बघेला एच. एस. ''शिक्षा तथा भारतीय समाज'' भार्गव बुक हाउस आगरा – 2 पृ. सं. 316
2. शर्मा गणपति राय, व्यास हरिश्चन्द्र ''उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर – 2008 पृ. सृ. 434
3. पाण्डेय, रामशकल, ''शिक्षा दर्शन'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा –2
4. शर्मा गणपति, व्यास हरिश्चन्द्र ''उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर – 2008
5. शर्मा, डी. एल. '' शिक्षा तथा भारतीय समाज '' आर लाल बुक डिपों मेरठ – 1995
6. माथुर एस. एस. '' शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार '' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 1997
7. शर्मा ओ पी व गुप्ता शोभा, '' उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा '' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा – 2005
8. परीक मथुरेश्वर, शर्मा रजनी '' उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा '' शिक्षा प्रकाशन जयपुर – 2004
9. औदित्य हिमांशु '' शिक्षा और उदीयमान भारतीय समाज'' आस्था प्रकाशन जयपुर – 2006
10. सिन्हा बी.के. '' शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज '' पदमा जैन, जवाहर नगर जयपुर – 2007

❖◆❖